REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2018

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की जबावदेही की अवधारणा

नरेन्द्रकुमार हमीरभाई भादरका
श्रीमती के. एम. जे. पटेल हाइस्कुल सायमा (खंभात – गुजरात)

प्रस्तावना

राष्ट्र के निर्माण में अध्यापक व शिक्षा दोनों प्रक्रिया का योगदान अतुलनीय है शिक्षा का यह महत्व अन्तकालिन है क्योंकि उसका सीधा सम्बन्ध जीवन की अनन्तता से है। आज के युग में अध्यापक का दायित्व बहुत बढ़ गया है वह बालक के चरित्र–निर्माण के रूप में प्रयुक्त होता है। बालक कितना भी प्रतिभाशाली हो अध्यापक का मार्गदर्शन आवश्यक है।

''शिक्षा आयोग ने यह स्पष्ट शब्दों में कहा है कि भारत का भाग्य वर्तमान कक्षाओं में हो रहा है। तथा कक्षाओं का भाग्य निश्चित रूप से अध्यापकों के हाथों में हैं।''

शयन वर्ग ने कहा है कि – 'अच्छा अध्यापक अपने तथा शिक्षा प्रणाली के संबंध में अपने ज्ञान की वृद्धि करने में सचेत रहता है'।

शिक्षा शब्द अपने आप मैं अनेक अर्थों को लिए हुए है। शिक्षा मानव जीवन को उचित दिशा प्रदान करती है, शिक्षा मानव को अच्छा इंसान बनाती है, शिक्षा में उचित आचरण और तकनीकी दक्षता, शिक्षण और विद्या प्राप्ति आदि समाविष्ट है इस प्रकार यह कौशलों व्यापारों या व्यवसायों एवं मानसिक, नैतिक और सौन्दर्यविषयक के उत्कर्ष पर केन्द्रित है।

शिक्षा, समाज को एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है। जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज के प्रत्येक क्षेत्र की संस्कृति की निरंतर बनाए रखती है।

शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में व्यस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति कौशल प्रदान कराती है। इसी सन्दर्भ में स्वामी विवेकान्नद जी ने कहा था कि – ''मनुष्य की अन्तनिर्हित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।''

अतः हम यह कह सकते है कि अध्यापक का स्वंय का व्यवहार अथवा व्यक्तित्व बालक के व्यवहार पर बहुत अधिक प्रभाव छोड़ता है।

जबाव देही का सम्प्रत्यय

वर्तमान परिदृश्य में शिक्षक की जबावदेही का सम्प्रत्यय अत्याधिक महत्वपूर्ण होता जा रहा है क्योंकि यह धारणा तीव्र होती जा रही है कि शैक्षिक उपलब्धियां समाज की उपेक्षाओं के अनुरूप नही है। शिक्षा के द्वारा सम्पूर्ण समाज को दिशा प्रदान की जाती है। यह दिशा या पथ पदर्शक शिक्षक है, इसलिए यह चिंता का विषय बन गया है कि अध्यापक अपने कर्तव्य के प्रति दायित्व बोध युक्त है कि नहीं। सर्वप्रथम यह जान लेना आवश्यक होगा कि हमारी संकल्पना जबावदेही के सप्रंत्यय के विषय में क्या है।

जबावदेही की अवधारणा का मूल्य इसके उद्देश्य में निहित है यह किसी भी विषय की गुणवता बनाये रखने एवं विकसित करने का उद्देश्य रखती है। यह विषय की श्रेष्ठता बढ़ाने का प्रयास है। जबावदेही के अर्थ

की विचना क रते समय इस बात पर बल देना अनिवार्य है कि एक अभिकर्ता अपनी क्रियाओं के प्रति जबावदेह होता है। इस अर्थ में हम जबावदेही को हम 'उतरदायित्व' से भिन्न समझते है।

शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापक क्या करता है, वह मात्र शिक्षित करता या अनुदेशन प्रदान करता है, क्या अध्यापक द्वारा की गई कक्षागत क्रियाएं छात्रों के मानसिक ज्ञान, विकास, इच्छा शक्ति आदि से जुड़ी हुई है। बालक का सर्वागिण विकास करना अध्यापक की जबावदेही में आता है।

शैक्षिक जबावदेही की विशेषताएं

शैक्षिक जबावदेही को हम निम्न रूपों मैं देख सकते है जिसकी मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित है–

1. प्रथम जबावदेही में अध्यापक का व्यवहार आता है जिसके आधार पर वह संस्था प्रधान, अन्य स्टाफ तथा छात्रों आदि से प्रभावित होती है।
2. शैक्षिक जबावदेही की विशेषता यह है कि यह एक लक्ष्यपूर्ण क्रिया है जिसमें शिक्षक अपने कार्यो के द्वारा अपनी एकाऊटेबिलिटी का प्रकाशित करता है।

शिक्षक की जबावदेही का मूल्यांकन करने की विधि

राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् (छब्ज्) द्वारा शिक्षक की क्षमताओं से जुड़े विभिन्न आयामों के आधार पर मूल्यांकन कसौटियों का निर्धारण करना सर्वश्रेष्ठ माना गया। ये क्षेत्र निम्न प्रकार चित्र के रूप में दर्शाया गया है।

अध्ययन का औचित्यः

विद्यालयों में कार्य करते हुए शिक्षक बालक को आगे बढ़ते देखकर जहां संतुष्टि का आभास करते है वही दूसरी और अत्यधिक प्रयास के बावजूद बार–बार समझाने पर यदि बालकों के परिणामों में अन्तर नही ला पाते है तो वह दबाव का अनुभव करते है अत्यधिक कार्य भर तथा कार्य प्रस्तुति के अनुकूल ना होने पर भी शिक्षकों को कार्य दबाव का सामना करना पड़ता है विकासात्मक युग में विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को जहां एक और बालकों को पढ़ाने में सुख व संतुष्टि प्राप्त होती है वही उन्हे कार्य प्रकृति के कारण कार्य दबाव भी झेलना पड़ता है यदि दोनों परिस्थितियां साथ–साथ भी चल सकती है जिसका प्रभाव उनके कार्य निष्पादन पर पड़ता है इस समस्या के चयन करने का प्रमुख कारण है कि कार्य दबाव के कारण शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है इसे जानने के लिए शोधार्थी ने शोध समस्या के रूप में इस समस्या का चुनाव किया है। शोधार्थी के सामने निम्न प्रकार के प्रश्न उभरते हैः–

1. क्या सरकारी अध्यापकों से ज्यादा गैर सरकारी अध्यापकों में कार्य दबाव अधिक होता है।
2. क्या विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की प्रस्तुति का कार्य दबाव से संबंध है?
3. क्या लिंगागत भेदभाव के कारण शिक्षकों के कार्य दबाव में अन्तर पाया जाता है?

अध्ययन की उद्देश्यः

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य जबावदेही का निम्न के आधार पर अध्ययन करना–

क. लिंग के आधार पर
ख. विद्यालय के प्रकार के आधार पर
ग. स्थानीयता के आधार पर

अध्ययन की परिकल्पनाएंः

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य जबावदेही का निम्न के आधार पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता–

क. लिंग के आधार पर
ख. विद्यालय के प्रकार के आधार पर
ग. स्थानीयता के आधार पर

साहित्य की समीक्षा

जोशी रजनी (1991) इस अध्ययन में शिक्षकों जवाबदेही के सम्प्रत्यय के उद्‌भव की प्रकृति ज्ञात करने का प्रयास किया गया, साथ ही व्यावसायिक जवाबदेही के सम्प्रत्यय की प्रकृति ज्ञात की गयी शोधार्थी द्वारा शिक्षक की जवाबदेही से जुड़े विभिन्न आयोगों एवं समितियों की अनुशंसाओं की समीक्षा भी की गई। शिक्षा में व्यावसायिकता के सम्प्रत्यय का अध्ययन भी किया गया। शिक्षण के समप्रत्यय की आलोचनात्मक विवेचना की गई। जिससे यह ज्ञात किया जा सके कि शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यावसायिक आवश्यकताएं क्या है? यह भी अध्ययन करने का प्रयास किया गया कि शिक्षक की प्रभावशीलता को ज्ञात करने के कौन–कौन से तरीके हो सकते है? शोधार्थी ने विभिन्न प्रकार के अभिलेख शोध पत्रिकायें एवं पुस्तकों का अध्ययन कर शिक्षक की जवाबदेही से जुड़े सम्प्रत्यय को विश्लेषित किया शोध के मुख्य निष्कर्षों में जवाबदेही का अर्थ ज्ञात किया गया। विभिन्न क्षेत्र में जवाबदेही के सम्प्रत्ययों को ज्ञात किया गया। शिक्षण व्यवसाय में जवाबदेही कम होने के कारण ज्ञात किये गये। व्यावसायिक जवाबदेही के कारकों को खोजा गया था। अनुदेशनात्मक एवं जिम्मेदारियाँ, शिक्षकों का स्वंय का मूल्यांकन, कक्षा–कक्ष वातावरण, व्यवस्थित अवलोकन, व्यक्तिगत शीलगुण आदि भी व्यावसायिक जिम्मेदारी के लिए घटक के रूप में खोजे गये।

मीणा, सुनील (2002) ने 'सरकारी कार्यक्रमों से शिक्षण गुणवत्ता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'। कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राज) के अन्तर्गत 2002 में किया गया है। सरकारी कार्यक्रमों की जानकारी लेना। शिक्षक रूचि का पता लगाना। शिक्षक संलग्नता की जानकारी लेना। उक्त अध्ययन से निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सरकारी कार्यक्रमों के संचालन से शिक्षकों की रूचि को नहीं बढ़ाया जा सकता है। अतः सभी कार्यक्रमों द्वारा शिक्षण गुणवत्ता प्रभावित नहीं होती है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोधकार्य में गुजरात राज्य के सभी माध्यमिक स्कूल शिक्षकों में से 100 शिक्षक सरकारी स्कूल 100 शिक्षक निजी स्कूल से तथा 50 पुरूष व 50 महिला शिक्षक के रूप में विभाजित किए गए है।

अध्ययन के उपकरण

प्रस्तुत शोध के उद्‌देश्यों की पूर्ति के लिए उपकरण के रुप में डॉ0 प्रतिभा शर्मा की जवाबदेही मापनी का उपयोंग किया गया है।

निष्कर्ष

सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य जबावदेही पर अध्ययन के प्राप्त मध्यमान सार्थकता स्तर 0.01 के स्तर पर प्रभाव पाया गया। अतः हमारी शून्य परिकल्पना सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य जबावदेही में कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ता को अस्वीकार किया जाता है।

विवेचनाः सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण व शहरी, महिला व पुरूष अध्यापकों की कार्य जबावदेही पर अध्ययन के लिए प्राप्त मध्यमान पर प्रभाव पाया गया।

सुझावः

1. अध्यापक अपनी शिक्षण कुशलता को बढ़ाकर अपने शिक्षण स्तर को उच्च करने का प्रयास करेगा।
2. अध्यापक व्यवसायिक संतुष्टि को बढ़ाने का प्रयास करेगा।
3. अध्यापक कार्य जवाबदेही के प्रति सजगता उत्पन्न कर सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिकंदर, ई. जोसेफ और राजेद्रन, के. (1992), स्वंय की अवधारणा, सेक्स, क्षेत्र और विद्‌यार्थी की समायोजन समस्याओं पर माता–पिता की शिक्षा का प्रभाव जनरल ऑफ शैक्षिक और अनुसंधान विस्तार, खंड 28 नंबर 3, पृ. 12

2. आर्चर, जे. (1997), पुरूष और महिला कैदियों में आक्रामकता के बारे में विश्वास, आक्रामक व्यवहार, वॉल्यूम 23, पृ. 405–415
3. अश्विनी कुमार (2009), नौकरी सम्मिलन, पुरूष और महिला शिक्षकों के बीच अपने निर्धारकों का विश्लेषण।
4. बैरइम्न, एच.एम. और स्कॉट, जे. (2001) युवा किशोर की कल्याण और स्वास्थ्य जोखिम व्यवहार, लिंग और सामाजिक–आर्थिक मतभेद, किशारों की जनरल वॉल्यूम 24, पृ. 183–197
5. ब्राडली, आर.एच. और कोरविन, आर.एफ. (2002), सामाजिक–आर्थिक स्थिति और बाल विकास, मनोविज्ञान, वॉल्यूम की वार्षिक समीक्षा 52: पृ. 371–399

नरेन्द्रकुमार हमीरभाई भादरका
श्रीमती के. एम. जे. पटेल हाइस्कुल सायमा (खंभात – गुजरात)